B.A. History Hon's, Part: II
Paper: III, Unit: IV, Date: Lecture No.: 23
20.10.2020

Lession: सल्तनत काल में व्यापार-वाणिज्य के कारण

प्रारम्भिक मध्यकाल में नगरों के पतन, मुद्रा की दुर्लभता, विकेन्द्रित सामन्ती राज्य प्रणाली प्रादेशिक राज्यों के अनवरत संघर्ष और सर्वोपरि ग्रामीण अर्थ प्रणाली की प्रमुखता के कारण व्यापार वाणिज्य का निराशाजनक ह्रास हुआ। 13वीं सदी के प्रारम्भ में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद भारत में व्यापार वाणिज्य का पुनरोदय हुआ जो अगले तीन शताब्दी तक लगातार विकसित होता रहा। मुगलों को जब भारत की राजसत्ता मिली जो उस समय भारत कृषि, उद्योग, शिल्प और व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में काफी खुशहाल अवस्था में था।

भारत के व्यापार वाणिज्य के इतिहास में प्राचीन काल के अन्त से लेकर 10वीं सदी तक की अवधि को ह्रास का काल माना जाता है। 9वीं-14वीं सदी के मध्य भारतीय व्यापार को पुनर्जीवन मिला। इस अवधि में स्वर्ण धातु मुद्रा का चलन हुआ, समुन्नत कृषि के अधिशेषों का विपणन बढ़ा, सामन्तों एवं कुलीनों के द्वारा उपभोक्ता सामग्रियों की माँग बढ़ी, क्षेत्रीय राज्यों तथा बाद में दिल्ली सल्तनत ने नगरों के विकास को प्रोत्साहित किया, राजमार्गों तथा परिवहन का विकास हुआ और अरब, चीन तथा दक्षिणी एशियाई देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध गहरा हुआ। बन्दरगाहों के विकास के कारण आयात-निर्यात व्यापार बढ़ा। दरअसल 9वीं सदी से 13वीं सदी के ~~बीच~~ मध्य भारत में व्यापार वाणिज्य ने रफ्तार पकड़ी, जो आगे भी जारी रहा।

सल्तनत काल में राज्य व्यवस्था के संगठित विकास के साथ कृषि, उद्योग, शिल्प और व्यापार वाणिज्य का भी विकास हुआ। यही कारण है कि 14वीं सदी में नये बन्दरगाहों का निर्माण एवं पुरानों का पुनरुद्धार हुआ तथा नगरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। गृह उद्योग अब कारखाने में रूपान्तरित होने लगा, जहाँ शिल्पी-कारीगर और श्रमिक सामूहिक उत्पादन कार्यों में लगे। शाही कारखानों में भारी संख्या में दासों को लगाया गया। इनके उत्पादन की मात्रा बढ़ी, जिसे देशी नगरों और विदेशी बाजारों में खपाया जा सकता था। गाँव जहाँ खाद्यान्नों एवं अन्य कच्चे माल के लिए गाँवों पर निर्भर थे, वहीं ग्रामीण आबादी शहरी कारखानों में तैयार उपभोक्ता सामग्रियों के प्रति आकर्षित हुई। भारत में निर्मित उत्कृष्ट उत्पादों की माँग विदेशों में बढ़ी। फलतः 14वीं-15वीं सदियों के दौरान भारतीय व्यापार-वाणिज्य में नया उछाल आया, जो लम्बे समय तक बना रहा।

सल्तनत काल में खाद्यान्नों के अलावा तेल, मक्खन, नमक, नारियल, सुपारी, गुड़, मिश्री, नील, पान के पत्ते, मसाले, सूती-रेशमी ऊनी कपड़े, धातु एवं लकड़ी निर्मित कलात्मक उपकरण, रत्न, रंग, काँसा एवं पीतल के बर्तन, हाथीदाँत की बनी सामग्रियाँ आदि प्रमुख व्यापारिक सामग्रियाँ थीं, जिनका आन्तरिक और बाह्य व्यापार होता था।

सल्तनत काल में उद्योग एवं शिल्प का विशिष्टीकरण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विशिष्ट नगरों या गाँवों या क्षेत्रों के उत्पादों की माँग देश-विदेश में बढ़ी। उदाहरणस्वरूप लखनौती (बंगाल) के वस्त्र, मुल्तान के शक्कर, सिरसा (हरियाणा) के घी, देवगिरी के मलमल, आगरा एवं अलीगढ़ की शराब आदि की माँग बाजार में काफी अधिक थी।

सल्तनत काल में गुजरात के बन्दरगाहों से अरब और फारस की खाड़ी के देशों से व्यापार-विनिमय होता था। फारस की खाड़ी लाल सागर से जुड़ा हुआ था। लाल सागर के तट पर अदन सोया और जद्दा का बन्दरगाह था। गुजरात के खम्भात के बन्दरगाहों से मलक्का की खाड़ी देशों से भी व्यापार होता था। खम्भात के अलावे भड़ौच का बन्दरगाह भी काफी व्यस्त रहता था।

B.A. History Hon's, Part: II
Paper: III, Unit: IV, Date: Lecture No.: 23
20.10.2020

Lession: सल्तनत काल में व्यापार-वाणिज्य के कारण

प्रारम्भिक मध्यकाल में नगरों के पतन, मुद्रा की दुर्लभता, विकेन्द्रित सामन्ती राज्य प्रणाली प्रादेशिक राज्यों के अनवरत संघर्ष और सर्वोपरि ग्रामीण अर्थ प्रणाली की प्रमुखता के कारण व्यापार वाणिज्य का निराशाजनक ह्रास हुआ। 13वीं सदी के प्रारम्भ में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद भारत में व्यापार वाणिज्य का पुनरोदय हुआ जो अगले तीन शताब्दी तक लगातार विकसित होता रहा। मुगलों को जब भारत की राजसत्ता मिली जो उस समय भारत कृषि, उद्योग, शिल्प और व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में काफी खुशहाल अवस्था में था।

भारत के व्यापार वाणिज्य के इतिहास में प्राचीन काल के अन्त से लेकर 10वीं सदी तक की अवधि को ह्रास का काल माना जाता है। 9वीं-14वीं सदी के मध्य भारतीय व्यापार को पुनर्जीवन मिला। इस अवधि में स्वर्ण से धातु मुद्रा का चलन हुआ, समुन्नत कृषि के अधिशेषों का विपणन बढ़ा, सामन्तों एवं कुलीनों के द्वारा उपभोक्ता सामग्रियों की माँग बढ़ी, क्षेत्रीय राज्यों तथा बाद में दिल्ली सल्तनत ने नगरों के विकास को प्रोत्साहित किया, राजमार्गों तथा परिवहन का विकास हुआ और अरब, चीन तथा दक्षिणी एशियाई देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध गहरा हुआ। बन्दरगाहों के विकास के कारण आयात-निर्यात व्यापार बढ़ा। दरअसल 9वीं सदी से 13वीं सदी के ~~बीच~~ मध्य भारत में व्यापार वाणिज्य ने रफ्तार पकड़ी जो आगे भी जारी रहा।

सल्तनत काल में राज्य व्यवस्था के संगठित विकास के साथ कृषि उद्योग, शिल्प और व्यापार वाणिज्य का भी विकास हुआ। यही कारण है कि 14वीं सदी में नये बन्दरगाहों का निर्माण एवं पुरानों का पुनरुद्धार हुआ तथा नगरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। गृह उद्योग अब कारखाने में रूपान्तरित होने लगा, जहाँ शिल्पी-कारीगर और श्रमिक सामूहिक उत्पादन कार्यों में लगे। शाही कारखानों में भारी संख्या में दासों को लगाया गया। इनके उत्पादन की मात्रा बढ़ी, जिसे देशी नगरों और विदेशी बाजारों में खपाया जा सकता था। गृह जहाँ खाद्यान्नों एवं अन्य कच्चे माल के लिए गाँवों पर निर्भर थे, वहीं ग्रामीण आबादी शहरी कारखानों में तैयार उपभोक्ता सामग्रियों के प्रति आकर्षित हुई। भारत में निर्मित उत्कृष्ट उत्पादों की माँग विदेशों में बढ़ी। फलतः 14वीं-15वीं सदियों के दौरान भारतीय व्यापार-वाणिज्य में नया उछाल आया, जो लम्बे समय तक बना रहा।

सल्तनत काल में खाद्यान्नों के अलावा तेल, मक्खन, नमक, नारियल, सुपारी, गुड़, मिश्री, नील, पान के पत्ते, मसाले, सूती-रेशमी ऊनी कपड़े, धातु एवं लकड़ी निर्मित कलात्मक उपकरण, रत्न, रंग, काँसा एवं पीतल के बर्तन, हाथीदाँत की बनी सामग्रियाँ आदि प्रमुख व्यापारिक सामग्रियाँ थीं, जिनका आन्तरिक और बाह्य व्यापार होता था।

सल्तनत काल में उद्योग एवं शिल्प का विशिष्टीकरण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विशिष्ट नगरों या गाँवों या क्षेत्रों के उत्पादों की माँग देश-विदेश में बढ़ी। उदाहरणस्वरूप लखनौती (बंगाल) के वस्त्र, मुल्तान के शक्कर, सिरसा (हरियाणा) के घी, देवगिरी के मलमल, आगरा एवं अलीगढ़ की शराब आदि की माँग बाजार में काफी अधिक थी।

सल्तनत काल में गुजरात के बन्दरगाहों से अरब और फारस की खाड़ी के देशों से व्यापार-विनिमय होता था। फारस की खाड़ी लाल सागर से जुड़ा हुआ था। लाल सागर के तट पर अदन, मोचा और जद्दा का बन्दरगाह था। गुजरात के खम्भात के बन्दरगाहों से मलक्का की खाड़ी देशों से भी व्यापार होता था। खम्भात के अलावे भड़ौच का बन्दरगाह भी काफी व्यस्त रहता था।

मिस्र, सीरिया, यमन, जिनेवा, वेनिस, अर्मेनिया आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध होने के साक्ष्य इन बन्दरगाहों से मिले हैं। इस प्रकार भारत का व्यापारिक सम्बन्ध एशिया के विभिन्न भागों से ही नहीं अपितु यूरोपीय देशों के साथ भी था। इसी तरह सिंध तथा गुजरात के अलावे दक्षिण में मालाबार तथा कोरोमंडल तट के बन्दरगाह भी काफी समुन्नत थे, जो भारत के दक्षिण-पूर्वी एवं पूर्वी एशियाई देशों से व्यापार को सम्हालते थे। यह भारत का समृद्ध लाभदायक बाजार था, जिसमें भारत के पास निर्यात के लिए विपुल सामग्रियाँ थी, परन्तु आयात के लिए घोड़ों दासों या फिर विशिष्ट सामग्रियों के अलावा कुछ नहीं था। भारत की इस समृद्धि व्यापार से आकर्षित होकर यूरोपीय देशों की नजर भारत की ओर गयी। इसमें पहली सफलता पुर्तगालियों को मिली। 1498 में पुर्तगाल का वास्को-द-गामा के कालीकट पहुँचने के साथ भारतीय व्यापारिक क्षेत्र में एक नई शक्ति का पदार्पण हुआ जिसका खामियाजा अरब ही नहीं भारतीय व्यापारियों को भी उठाना पड़ा। फिर भी पुरे सल्तनत काल में भारत के आयात-निर्यात व्यापार का संतुलन भारत के पक्ष में बना रहा।

इस प्रकार 10वीं सदी में भारतीय व्यापार पुनर्जीवित हुआ और सल्तनत काल में इसने गति पकड़ा। सल्तनत के आधिपत्य से पश्चिमोत्तर भारत का अवरुद्ध व्यापारिक मार्ग खुल गया। भारत का बाह्य व्यापार पश्चिम, मध्य तथा पूर्वी एशिया से जुड़ गया। सिन्ध में देवल से लेकर गुजरात होते हुए कोरोमंडल तक और पूरब में बंगाल की खाड़ी में ताम्रलिप्ति से चीन तक व्यापारिक मार्ग खुल गया। सल्तनत काल में प्राचीन भारत की तरह भारत का व्यापार दुनिया के कोने-कोने तक फैल गया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर.